मज़ाकिया भेड़िया

हंगरी की लोककथा

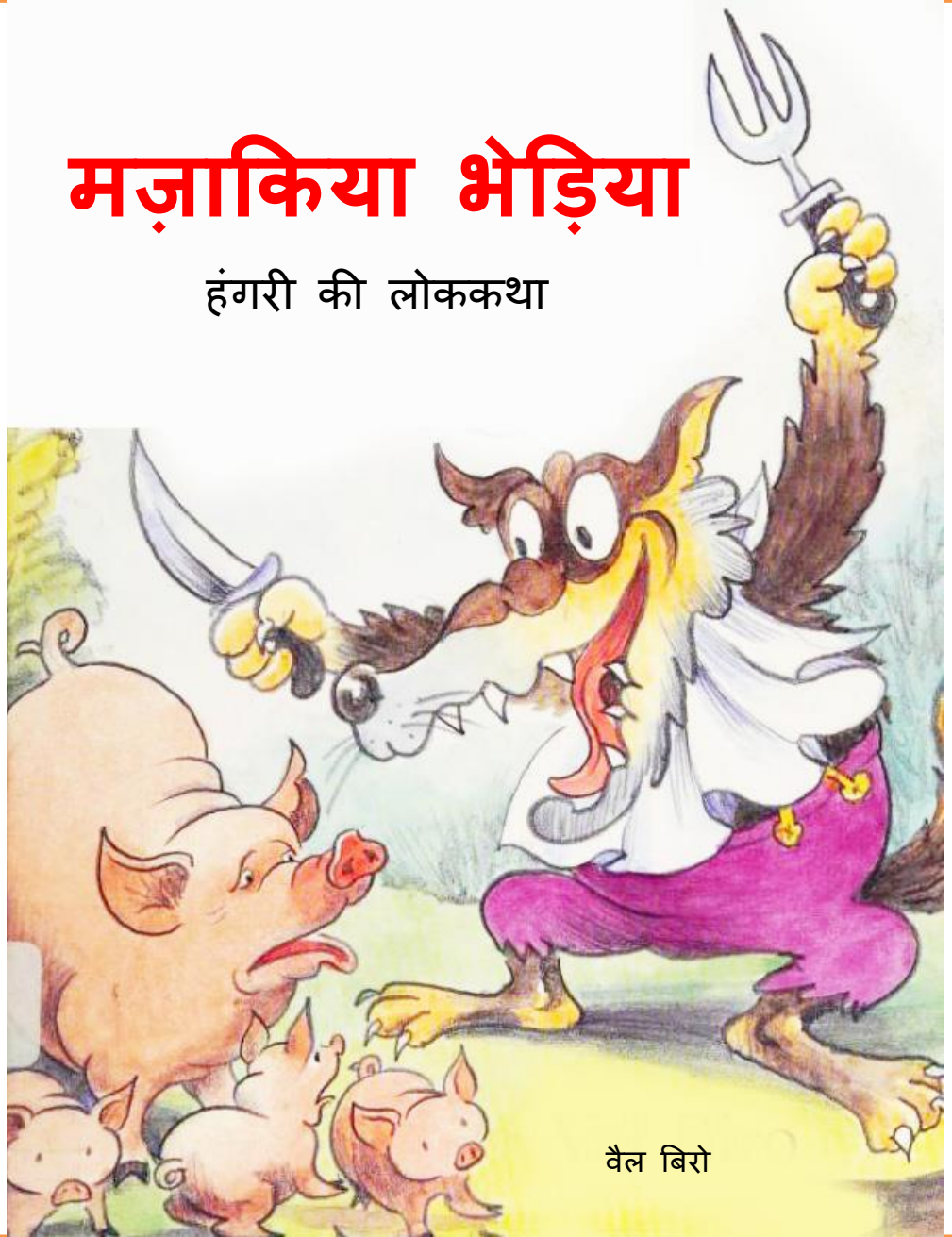

वैल बिरो

मज़ाकिया भेड़िया

हंगरी की लोककथा

वैल बिरो

एक बार की बात है एक किसान था जो बेहद मतलबी और लालची था. किसान इतना लालची था कि वो सर्दियों में अपने घर के अंदर ही रहता था और हर रोज़ छह लोगों का खाना खाता था. उससे वो इतना मोटा हो गया कि अब वो टब जैसा दिखने लगा था.

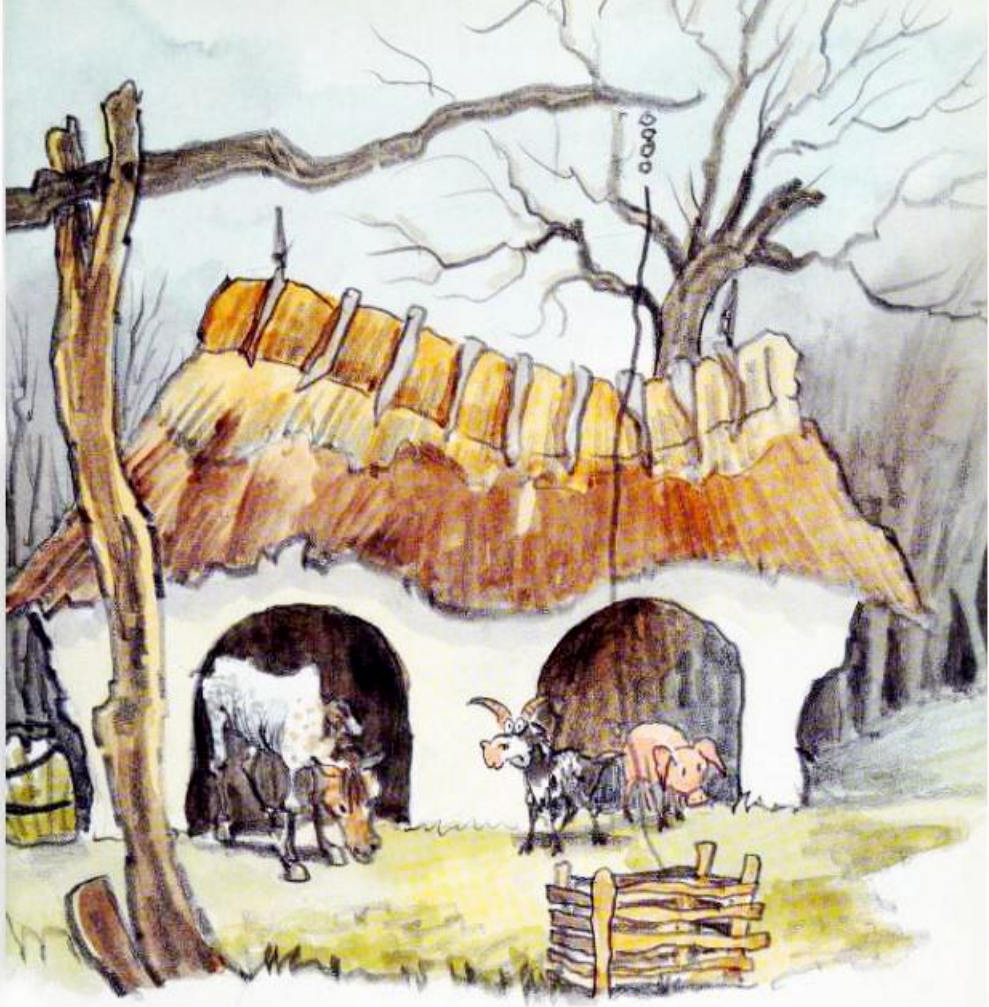

बाहर के खलिहान में उसने एक घोड़ा, एक बकरी और एक सुअर पाल रखा था. लेकिन किसान इतना मतलबी था कि वो बमुश्किल से उन्हें खाना खिलाता था. गरीब जीव भूख से मर रहे थे, और जाड़े के अंत तक उनकी हड्डियां दिखाई देने लगीं थीं.

वसंत की एक सुबह किसान ने अपना आपा खो दिया.
“ज़रा खुद को देखो!” वो जानवरों पर चिल्लाया.
“तुम सर्दियों में मोटे क्यों नहीं हुए?
अब तुम मेरे किसी काम के नहीं हो,
यहाँ से निकल जाओ!”
और फिर उसने खलिहान का फाटक खोल दिया.
“मुझे इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं है
कि भेड़िये तुम्हें खा जाएं!”

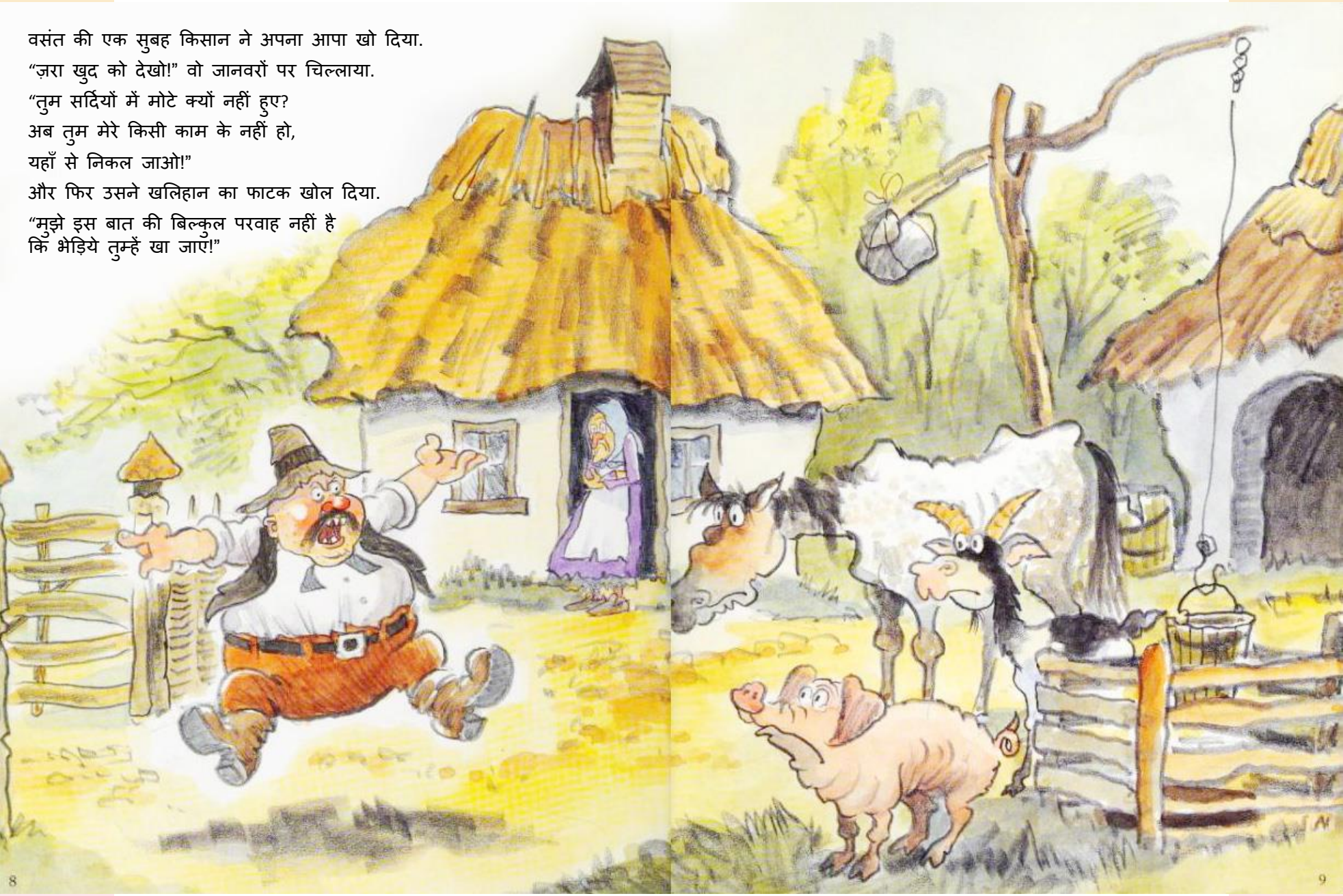

अब, ऐसा हुआ कि पास ही में एक भेड़िया था, और उसने किसान की बात सुनी. भेड़िया बहुत भूखा था, इसलिए जब उसने घोड़े को बाहर आते देखा, तो वो उसपर कूद पड़ा और बोला. “मैं तुम्हें खाऊंगा, क्योंकि किसान ने वो कहा है!”

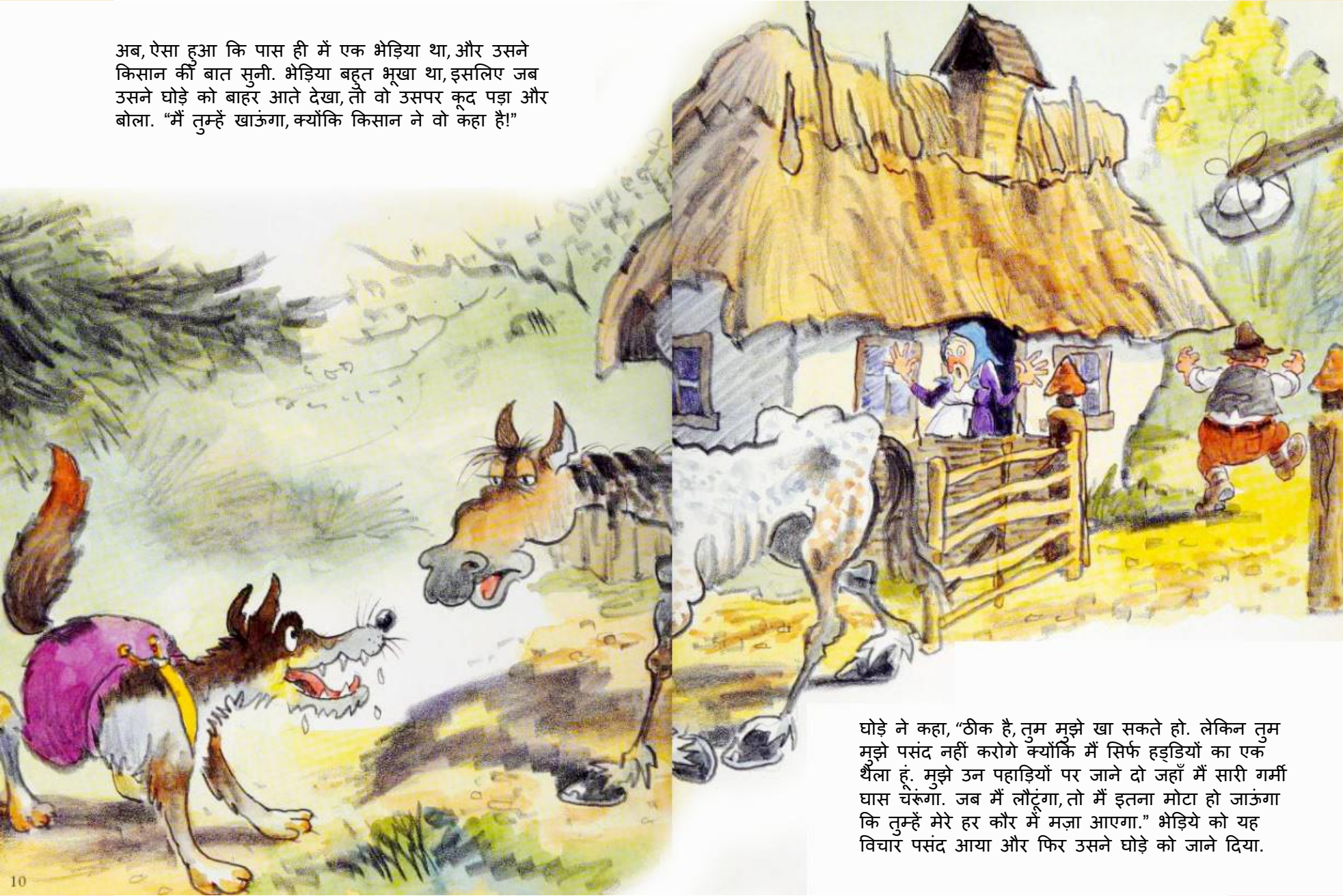

घोड़े ने कहा, “ठीक है, तुम मुझे खा सकते हो. लेकिन तुम मुझे पसंद नहीं करोगे क्योंकि मैं सिर्फ हड्डियों का एक थैला हूं. मुझे उन पहाड़ियों पर जाने दो जहाँ मैं सारी गर्मी घास चरूंगा. जब मैं लौटूंगा, तो मैं इतना मोटा हो जाऊंगा कि तुम्हें मेरे हर कौर में मज़ा आएगा.” भेड़िये को यह विचार पसंद आया और फिर उसने घोड़े को जाने दिया.

आगे भेड़िये को सड़क पर टहलता हुआ सुअर मिला. भेड़िये ने उसे रोका, “किसान ने कहा है कि मैं तुम्हें खा सकता हूँ!” “यदि तुम्हें सुअर पसंद है तो तुम ज़रूर मुझे खा सकते हो, लेकिन ज़रा मुझे देखो! मैं सिर्फ हड्डियों का एक थैला हूं. अगर तुम पतझड़ तक प्रतीक्षा करोगे, तब तक मैं बहुत मोटा हो जाऊंगा और मैं अपने मोटे छोटे सुअर के बच्चों के साथ वापिस लौटूंगा, फिर तुम हमें मज़े से खाना.”

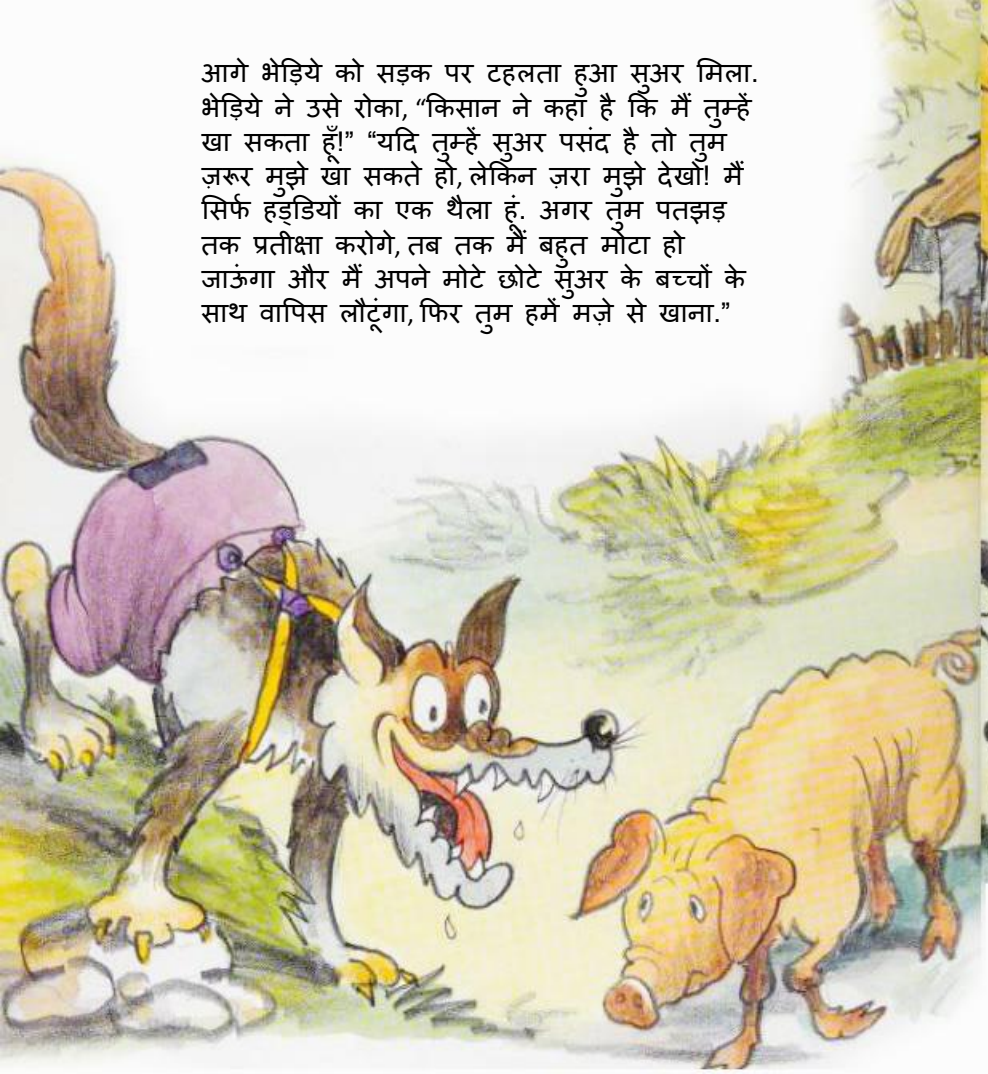

भेड़िये को मोटे छोटे सुअर के बच्चों की आवाज पसंद थी, इसलिए उसने सुअर को उसके रास्ते जाने दिया.

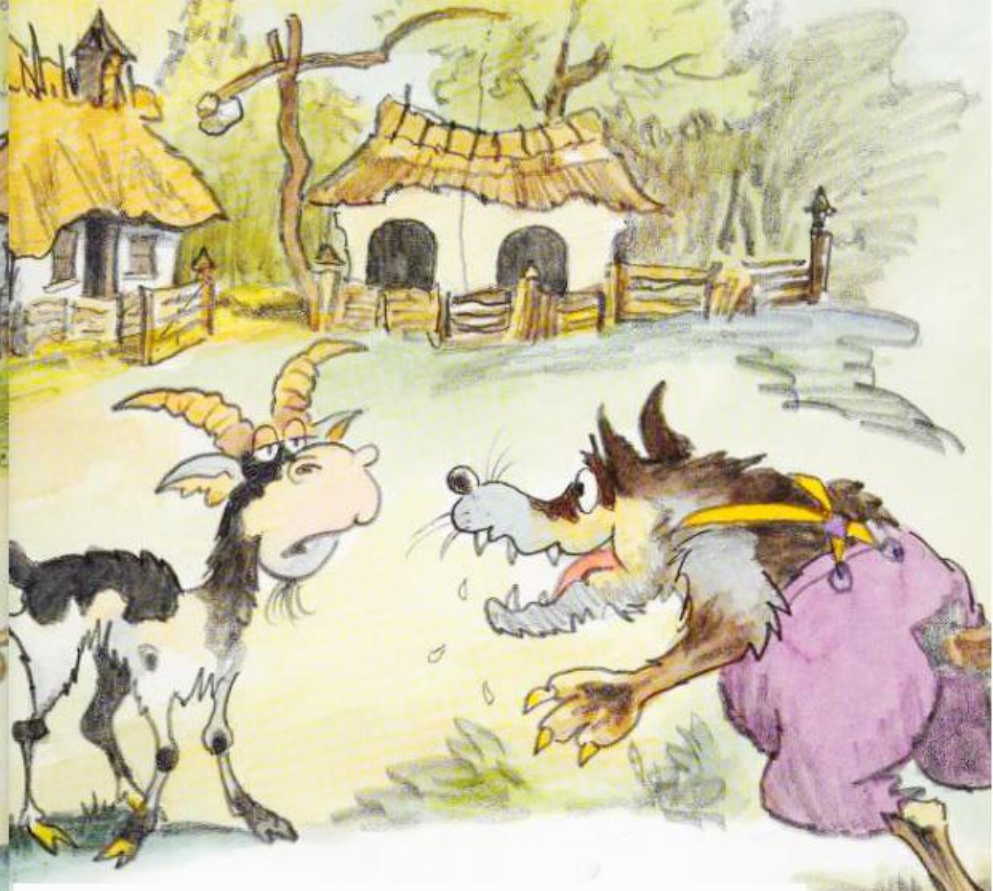

तभी भेड़िये को बकरी दिखाई दी. भेड़िया तुरंत उसकी ओर लपका.

“किसान ने कहा है कि मैं तुम्हें खा सकता हूँ!”

“ज़रूर,” बकरी ने उत्तर दिया, “लेकिन मैं अभी सिर्फ एक हड्डियों का थैला मात्र हूँ. इन सर्दियों में जब तक मैं पहाड़ियों से वापस नहीं आती, तब तक तुम इंतज़ार करो, फिर तुम पेट भरकर मुझे खाना.”

बकरी सही कह रही है, भेड़िया खुद से बुदबुदाया, और फिर उसने बकरी को भी जाने दिया.

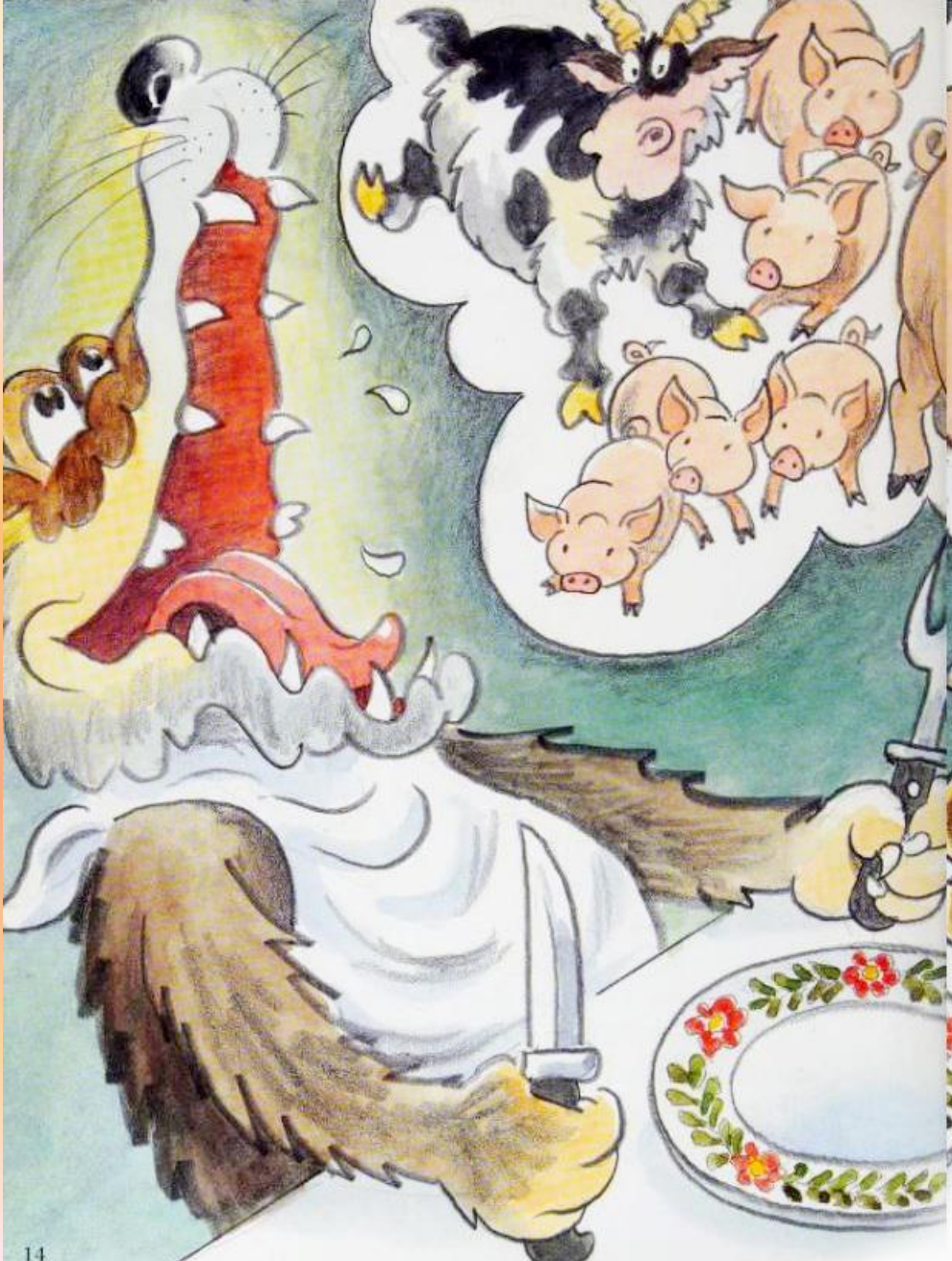

भेड़िये ने पूरी गर्मी अपने महान शरदकालीन दावत की तैयारी में बिताई. वो मोटे घोड़ों, गोल-मटोल बकरियों के सपने देखता रहा. सूअर के रसीले मांस के बारे में सोचते ही उसके मुँह से लार टपकने लगती थी. वे सभी जानवर पहाड़ी से नीचे उसकी खाने की मेज की ओर आने वाले थे.

अंत में शरद ऋतु आई. भेड़िये ने यह अनुमान लगाने की कोशिश की कि पहले कौन सा जीव आएगा. अब उसके लिए और इंतजार करना मुश्किल हो रहा था.

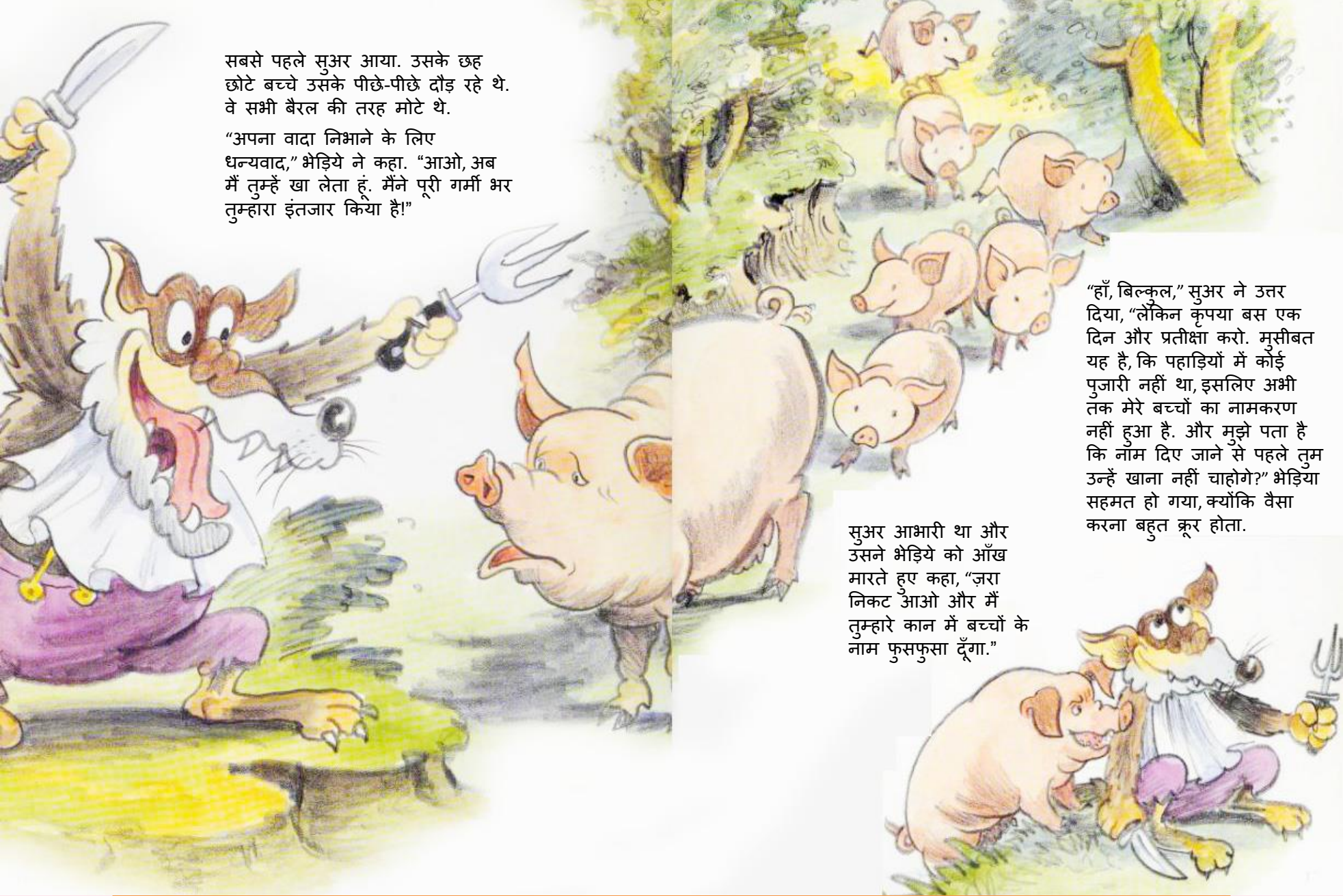

सबसे पहले सुअर आया. उसके छह छोटे बच्चे उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे. वे सभी बैरल की तरह मोटे थे.

"अपना वादा निभाने के लिए धन्यवाद," भेड़िये ने कहा. "आओ, अब मैं तुम्हें खा लेता हूं. मैंने पूरी गर्मी भर तुम्हारा इंतजार किया है!"

"हाँ, बिल्कुल," सुअर ने उत्तर दिया, "लेकिन कृपया बस एक दिन और प्रतीक्षा करो. मुसीबत यह है, कि पहाड़ियों में कोई पुजारी नहीं था, इसलिए अभी तक मेरे बच्चों का नामकरण नहीं हुआ है. और मुझे पता है कि नाम दिए जाने से पहले तुम उन्हें खाना नहीं चाहोगे?" भेड़िया सहमत हो गया, क्योंकि वैसा करना बहुत क्रूर होता.

सुअर आभारी था और उसने भेड़िये को आँख मारते हुए कहा, "ज़रा निकट आओ और मैं तुम्हारे कान में बच्चों के नाम फुसफुसा दूँगा."

नाम फुसफुसाने की बजाए, सुअर ने भेड़िये के कान को अपने दांतों से जकड़ लिया और उसे तब तक हिलाया जब तक वो यह नहीं चिल्लाया: “रुको! रुको! मैं तो बस मजाक कर रहा था!”

लेकिन सुअर उसे लगातार हिलाता ही रहा, और फिर सुअर के बच्चे भी इस खेल में शामिल हो गए, जब तक कि उन्होंने भेड़िये की चमड़ी ढीली नहीं कर दी.

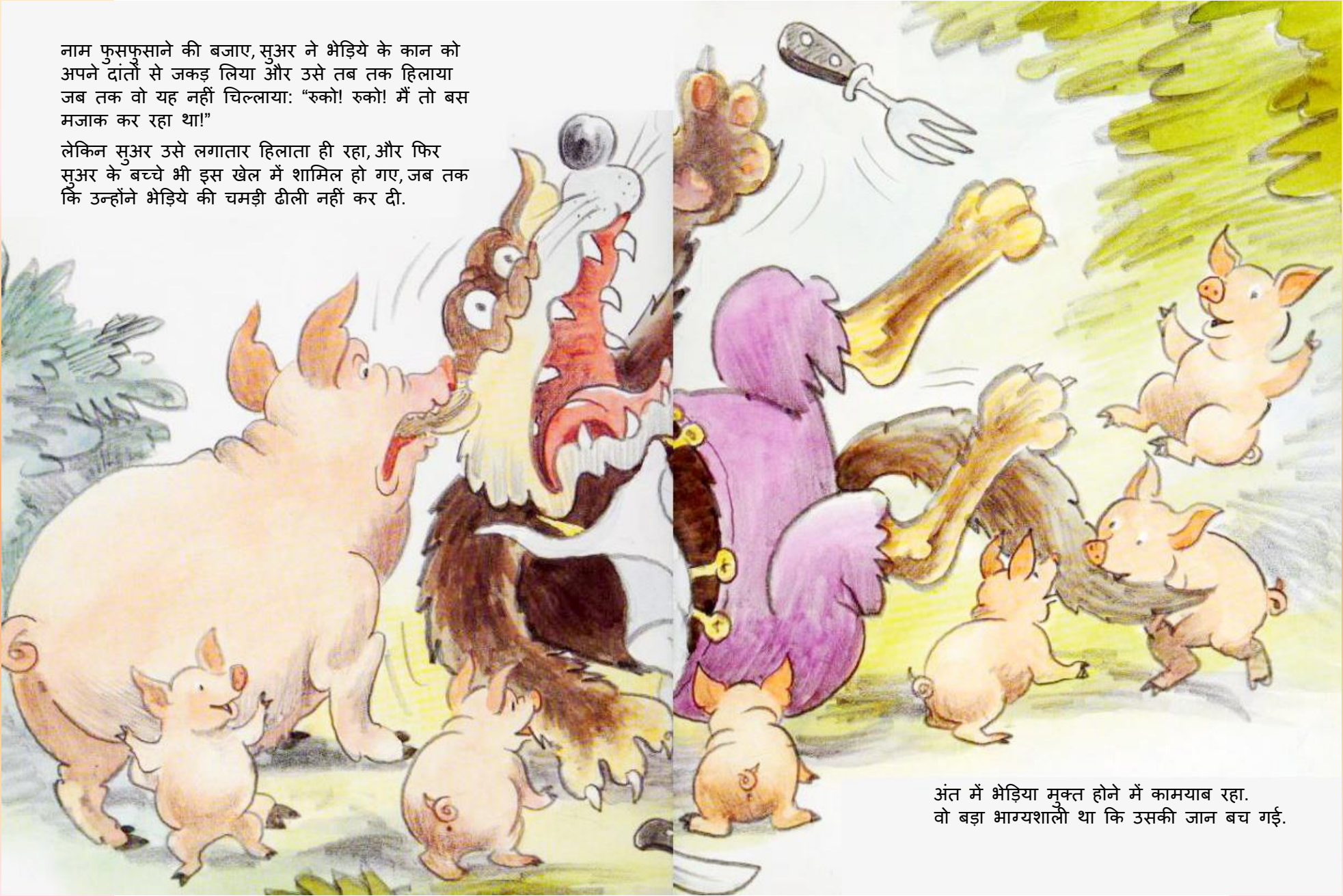

अंत में भेड़िया मुक्त होने में कामयाब रहा.
वो बड़ा भाग्यशाली था कि उसकी जान बच गई.

अभी भेड़िये की सांस वापस ही आई थी कि उसे बकरी दिखाई दी. उस मोटी बकरी को देखकर भेड़िया हाल के भयानक हादसे को भूल गया और उसके मुँह में फिर से पानी आने लगा.

“मुझे खुशी है कि तुम इतनी मोटी हो गई हो और अब मेरे खाने के लिए तैयार हो,” भेड़िये ने कहा. “लेकिन उस सुअर की तरह तुम मुझ पर कोई चाल मत खेलना!”

“मैं ऐसा क्यों करूंगी?” बकरी ने विरोध किया. “आखिरकार, मैंने सिर्फ तुम्हारे लिए ही खुद को मोटा किया है.”

यह सुनकर भेड़िया इतना खुश हुआ कि उसने बकरी को बहुत धीरे-धीरे खाने का वादा किया.

“धन्यवाद,” बकरी ने कहा. “बस अपना मुँह खोलो और मैं उसमें कूद जाऊँगी ताकि तुम मुझे पूरा-का-पूरा निगल सको.”

फिर भेड़िये ने अपना मुंह चौड़ा खोला और अपनी आंखें बंद कर लीं. बकरी ने अपना सिर नीचे किया और अपने सींगों से ज़ोरदार वार किया. लेकिन उसके मुंह में कूदने के बजाए ...

...बकरी ने भेड़िये को इतनी जोर से मारा कि वो उड़कर दूर गिर गया. बकरी बार-बार अपने सींगों से उसे मारती रही, और भेड़िया लगातार चिल्लाता रहा: “ऐसा मत करो! मैं तो बस मजाक कर रहा था!”

उसके बाद बकरी उसके ऊपर से कूदकर भाग गई. उसके बाद भेड़िया अपने घावों को चाटने के लिए एक झाड़ी में घुस गया.

जल्द ही घोड़ा आ गया, मोटा और तगड़ा. घोड़े को देखकर भेड़िये को पहले से भी कहीं ज्यादा भूख लगने लगी.

“मुझे खुशी है कि तुम वापस आ गए,” भेड़िये ने कहा. “यहाँ आओ, मैं तुम्हें चबा-चबा कर खाऊंगा. मैंने अभी रात का भोजन नहीं खाया है!”

घोड़े ने सिर हिलाया. “तुम ज़रूर मुझे चबा-चबाकर खाना, लेकिन उससे पहले मुझे गांव जाकर एक दुल्हन को उसकी शादी में लेकर जाना होगा. फिर मैं वापस आऊँगा और तब तुम पेट भरकर मुझे खाना.”

भेड़िये को घोड़े की चाल पर शक हुआ. “मैं खुद तुम्हारे साथ चलकर उस दुल्हन को देखना चाहता हूं.”

“बहुत अच्छा,” घोड़े ने कहा. “फिर आओ, मेरी पीठ पर चढ़ जाओ.”

जैसे ही भेड़िया, घोड़े की पीठ पर चढ़ा, घोड़ा सरपट दौड़ा और वे कुछ ही समय में गाँव पहुँच गए.

वहाँ एक बड़ी भीड़ थी, सभी लोग शादी के लिए सजे-धजे थे.

सरपट दौड़ते घोड़े पर भेड़िये को बैठे देखकर लोग सहम गए. “देखो भेड़िया! देखो भेड़िया!” वे चिल्लाए, “घोड़े पर बैठकर एक भेड़िया आ रहा है!” कुछ अपनी सुरक्षा के लिए इधर-उधर कूदे, लेकिन दूसरों ने लाठी और झाड़ू पकड़ी और भेड़िये को घोड़े से नीचे गिराया.

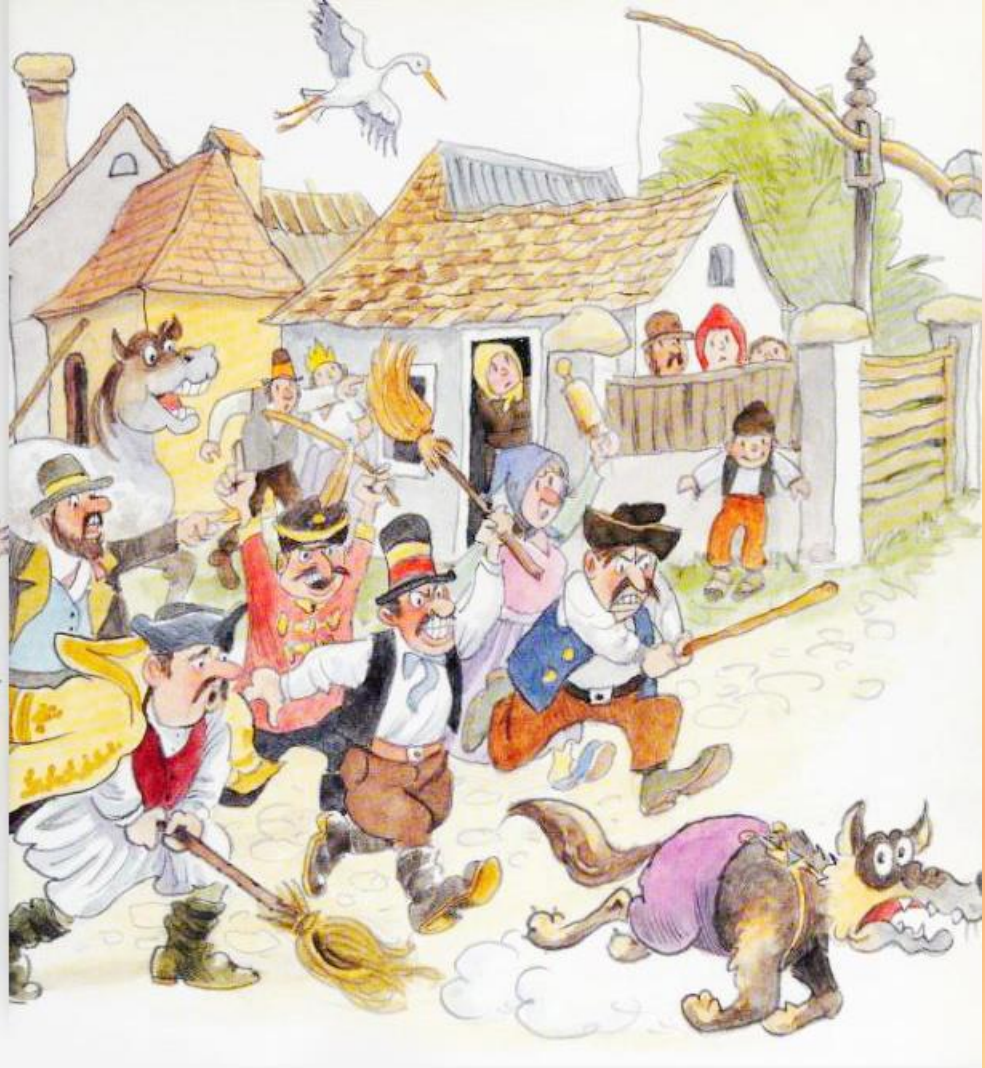

“मुझे मत मारो!” भेड़िया चिल्लाया, “मैं तो केवल मजाक कर रहा था!” लेकिन उन्होंने उसे जमकर पीटा, और फिर उसे गांव के बाहर खदेड़ दिया. भेड़िया बड़ी मुश्किल से जंगल में भागा.

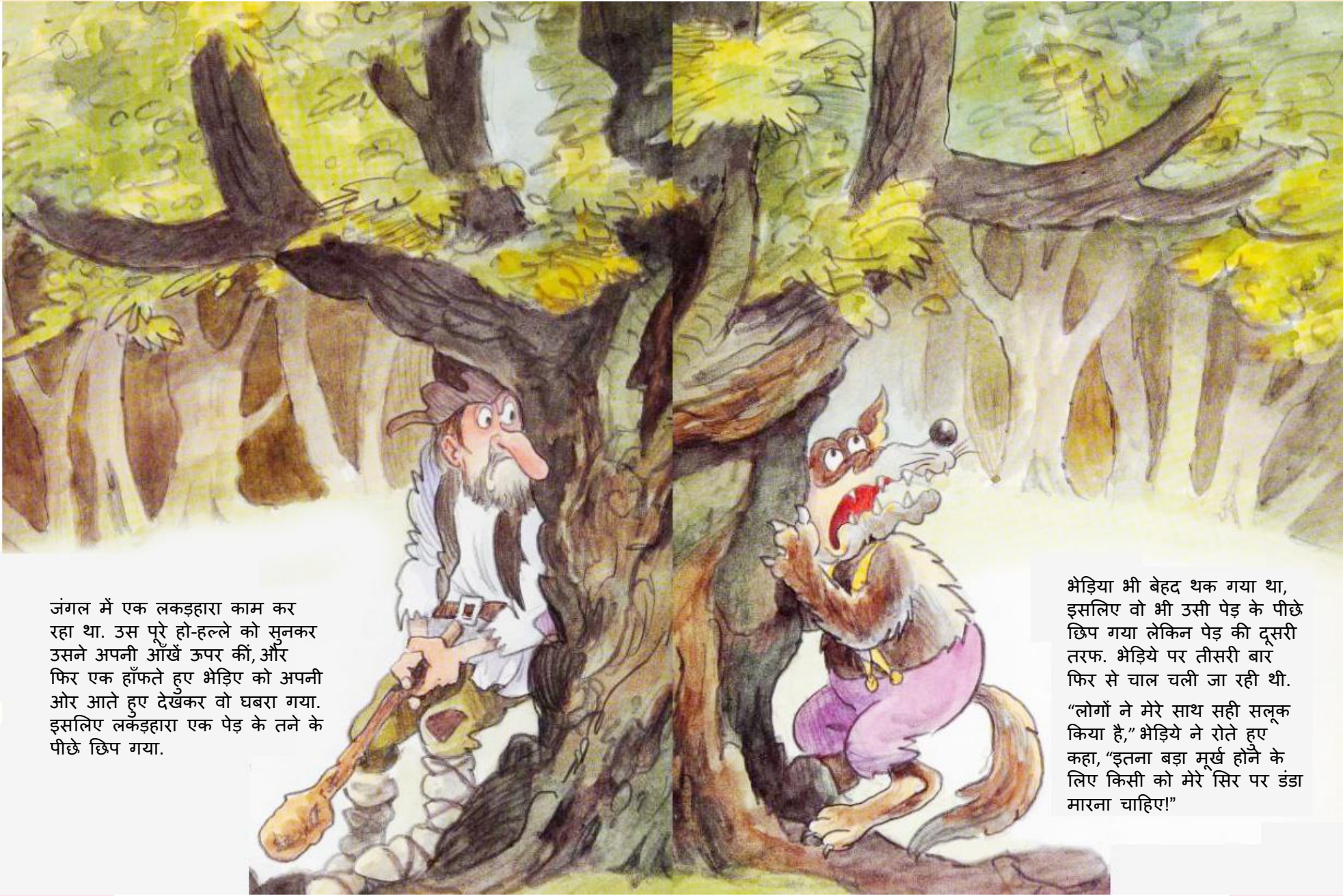

जंगल में एक लकड़हारा काम कर रहा था. उस पूरे हो-हल्ले को सुनकर उसने अपनी आँखें ऊपर कीं, और फिर एक हाँफते हुए भेड़िए को अपनी ओर आते हुए देखकर वो घबरा गया. इसलिए लकड़हारा एक पेड़ के तने के पीछे छिप गया.

भेड़िया भी बेहद थक गया था, इसलिए वो भी उसी पेड़ के पीछे छिप गया लेकिन पेड़ की दूसरी तरफ. भेड़िये पर तीसरी बार फिर से चाल चली जा रही थी.

"लोगों ने मेरे साथ सही सलूक किया है," भेड़िये ने रोते हुए कहा, "इतना बड़ा मूर्ख होने के लिए किसी को मेरे सिर पर डंडा मारना चाहिए!"

“ठीक है, अगर तुम यही चाहते हो,” लकड़हारे ने कहा. फिर यह लो! और उसने भेड़िये के सिर पर ज़ोर से एक डंडा मारा!

“लेकिन मैं तो केवल मजाक कर रहा था!” भेड़िये ने कहा और फिर वो लड़खड़ाता हुआ अपना सिर घुमाकर एक सुरक्षित दूरी पर चला गया.

“सचमुच,” भेड़िये ने सोचा, “दुनिया का क्या हाल हो गया है. अब लोग एक मजाक तक नहीं समझते हैं?”